E content MHSC CC-7 .by:-
Dr.Kavita Kumari
P.G Dept. Of Home Science.
Mob:No.+91-9430429995
Email: drkavitakumarising@gmail.com

MHSC. CC-7 :   Colour harmony,it's sensitivity and composition in dress

जब ड्रेस की बात करते हैं तो रंगो का समन्वय काफी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि रंग सिर्फ ड्रेस को सुंदर और आकर्षक ही नहीं बनाता बल्कि पहनने वाले के व्यक्तित्व को भी निखारता है और उनपर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी डालता है। टेक्सटाइल्स इंडस्ट्री मे रंगो का किस प्रकार उपयोग किया जाए इसके लिए कलर थेओरी का ज्ञान होना आवश्यक है।ड्रेस डिज़ाइन करते समय डिजाइनर को रंगों से जुड़ी हुई विस्तृत जानकारी जरूरी है। विभिन्न कलर स्कीम के बारे जानकारी होनी चाहिए ताकि रंगो का समन्वय करते समय अपनी जानकारियों का इस्तेमाल कर सकें। रंगों से संबन्धित अलग -अलग थेओरी दिये गए हैं जिनमें प्रांग ,मुनसेल ,मनोवैज्ञानिक और भौतिकी से संबन्धित हैं। लेकिन इसमें प्रांग का रंग सिद्ध्यांत ज्यादा प्रचलित है।

प्रांग ने रंगो को निम्नलिखित प्रकार विभाजित किया :

1. प्राथमिक रंग
2. द्वितीयक रंग
3. मध्यस्थ रंग
4. तृतीयक रंग
5. क्वार्टनरी रंग

लाल,नीला और पीला को प्राथमिक रंग कहा जाता है क्योंकि इन्ही रंगों से दूसरे रंगो की उत्पत्ति होती है ,प्राथमिक रंग इसलिए कहा गया है क्योंकि ये रंग दूसरे रंगो के मिलने से नहीं बनाए जा सकते ।

जब दो प्राथमिक रंगों को मिलाया जाता है तो द्वितीयक रंग प्राप्त होते हैं जैसे लाल और नीला मिलाने से बैंगनी रंग बनता है उसी प्रकार पीला और नीला को मिश्रित करने से हरा रंग बनता है। तीसरा द्वितीयक रंग पीला और लाल को मिलाने से मिलता है और वो रंग है संतरी।

प्राथमिक और उसके बगल वाले द्वितीयक रंग को मिलाने से इंटेर्मीडिएट या मध्यस्थ रंग बनता है जैसे पीला और संतरी रंग को मिलाकर पीला -संतरी रंग प्राप्त होता है इसी तरह से पीला और हरा के मिलने से पीला-हरा रंग बनता है। इस प्रकार कुल छह इंटेर्मीडिएट रंग होते हैं।

दो द्वितीयक रंगों को मिलाने से तृतीयक रंग प्राप्त होता है और दो तृतीयक रंगों को मिश्रित करने से चतुर्थक रंग का निर्माण होता है।इस प्रकार प्रांग ने एक रंग चक्र दिया जिसमे कुल बारह रंग होते हैं।इसी प्रकार जब दो द्वितीयक रंगो को मिलाया जाता है तो तृतीयक रंग बनता है ,उदाहरण के लिए नारंगी रंग को जब हारा रंग मे मिलते हैं तो तृतीयक पीला रंग बनता है।

E content MHSC CC-7 .by:-
Dr.Kavita Kumari
P.G Dept. Of Home Science.
Mob:No.+91-9430429995
Email: drkavitakumarising@gmail.com

प्रांग का रंग चक्र

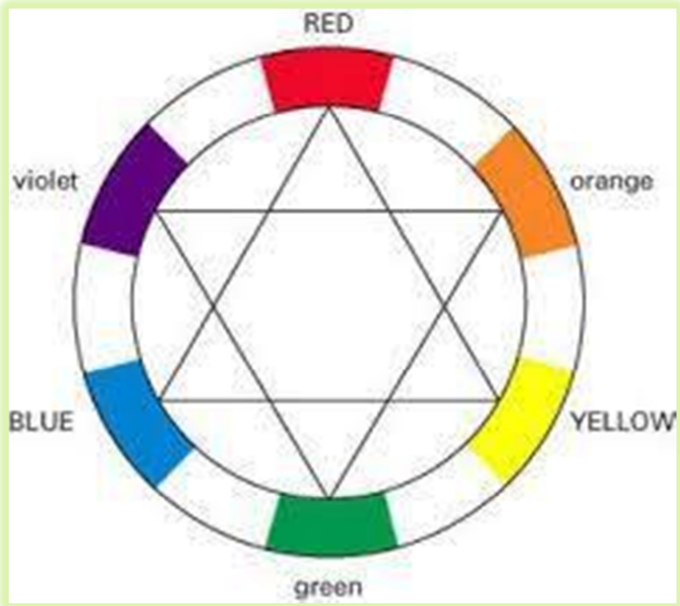

रंग योजना

विभिन्न रंगों के मिश्रण से जो अलग -अलग रंग बनते हैं उनके संयोग को किस प्रकार व्यक्त किया गया है ,रंग योजना कहलाते हैं। रंग योजना को मुख्य रूप से दो समूह में बांटा गया है i.समान रंग योजना ii.विरोधी रंग योजना ।

समान रंग योजना

इस रंग योजना में एक ही रंग से मिलते- जुलते रंगों के समूह को शामिल किया जाता है । समान रंग योजना को इस प्रकार से विभाजित किया जा सकता है-

1. एक रंग योजना (monochromatic colour scheme)
2. अनुरूप रंग योजना (analogous colour scheme)

E content MHSC CC-7 .by:-
Dr.Kavita Kumari
P.G Dept. Of Home Science.
Mob:No.+91-9430429995
Email: drkavitakumarising@gmail.com

एक रंग योजना में एक ही रंग के भिन्न -भिन्न टिंट या शेडों का प्रयोग किया जाता है जैसे नीला और हल्का नीला रंग का संयोग जब एक साथ प्रयोग किया जाता है।

अनुरूप रंग योजना

यह तीन परोसी रंगों का समूह है जिसे किसी भी फैशन या व्यवस्था में शामिल किया जाता है जिसे प्रांग के रंग चक्र के माध्यम से समझा जा सकता है । जैसे लाल ,लाल-नारंगी ,और नारंगी रंग ।

विरोधी रंग योजना

इसके अंतर्गत रंग चक्र मे वो रंग जो परस्पर विरोधी होते हैं ,विरोधी रंग योजना कहलाते हैं जैसे पीला और बैंगनी ,लाल और हरा इसी तरह नीला और नारंगी।

विरोधी रंग योजना के प्रकार

- पूरक रंग योजना (complementary colour scheme)
  उदाहरण : पीला और बैंगनी , लाल और हरा, नीला और नारंगी।

- विभक्त पूरक रंग योजना (split complementary colour scheme)

  उदाहरण : पीला ,लाल -बैंगनी ,नीला -बैंगनी

- ट्राइयडियक रंग योजना(Triadiac colour scheme) -इसके अंतर्गत तीन रंगो का वह समूह है जो रंग चक्र मे एक दूसरे से बराबर दूरी पर होते हैं यानि तीनों रंग equilateral त्रिभुज बनाते हैं ।

  उदाहरण : लाल,पीला ,नीला (प्राथमिक रंग)

  नारंगी ,बैंगनी ,हरा। (द्वितीयक रंग)

E content MHSC CC-7 .by:-
Dr.Kavita Kumari
P.G Dept. Of Home Science.
Mob:No.+91-9430429995
Email: drkavitakumarising@gmail.com

जैसा कि पहले भी कहा गया है रंग सिर्फ ड्रेस को सुंदरता ही नहीं प्रदान करता बल्कि व्यक्ति कि मनोदशा ,उसका दृष्टिकोण,भावनाओं एवं पूरे व्यक्तित्व को रिफ्लेक्ट करता है । रंग चक्र मे जो आधे ऊपरी हिस्से के रंग हैं उन्हे वार्म कलर कहते हैं और नीचे आधे हिस्से के रंग को कूल कलर कहा जाता है। लाल ,पीला ,नारंगी रंग जहाँ गर्म रंग कहे जाते हैं क्योंकि ये सूर्य और अग्नि को दर्शाते हैं वहीं नीला,हरा,हल्का बैंगनी ये सब ठंडे रंग कहलाते हैं क्योंकि ये जल और आसमान से मिलते जुलते हैं । यही कारण है कि गर्मियों में हल्का नीला ,आसमानी ,सफ़ेद या हल्के रंग ज्यादा पहने जाते हैं क्योंकि ये रंग आँखों को ठंढक देते हैं। उसी प्रकार ठंडे के दिनों में गाढ़े रंग के कपड़े पहना जाता है जिससे गर्मी को अधिक से अधिक सोख सकें और शरीर को गर्मी प्रदान करे। अगर अवसर की बात करें तो शादी समारोह या अन्य खुशी के मौके पर तड़क -भड़क रंग जैसे लाल,पीला ,संतरी,गुलाबी आदि रंग वाले ड्रेस पहनना पसंद करते हैं वही गम वाले मौकों पर सफेद या हल्के रंग के साधारण ड्रेस पहनने का प्रचलन है।

विभिन्न रंग योजनाओं को समझने में दिया गया चित्र काफी मदद कर सकता है। इसके माध्यम से से किन -किन रंगो को मिलने से कौन रंग बनता है और अलग -अलग रंगों के समूह को किस रंग योजना के अंतर्गत रखा जाता है इसे चित्र की सहायता से ज्यादा अच्छे से समझ सकते हैं ।

एक रंग योजना का ड्रेसों मे इस्तेमाल

एक रंग योजना का इस्तेमाल पेशेवर लुक देने के लिये किया जाता है इसके अलावे यदि व्यक्ति की लंबाई कम है और वो ऐसे ड्रेस पहनता है जिसमें एक ही रंग के शेड या टिंट इस्तेमाल हुए हैं तो वह ठोरा लंबा प्रतीत होता है। उदाहरण : अगर लंबे स्कर्ट मे गहरे रंग का इस्तेमाल करते हैं और टॉप हल्के नीले रंग का हो तो आपकी लंबाई थोड़ि ज्यादा लगेगी और ये एक रंग योजना का अच्छा उदाहरण है।

अनुरूप रंग योजना

इस रंग योजना मे वो तीन रंगों का समूह शामिल है जो एक दूसरे के पड़ोसी होते हैं । जैसे लाल, नारंगी और लाल नारंगी। यह सूर्यास्त के साथ-साथ महासागर के रंगों में भी दिखाई देता है। इसमे एक रंग मुख्य होता है और अन्य दो सहायक होता है। इसका उपयोग ड्रेस में ज्यादा सामंजस्य स्थापित करता है और अधिक परिष्कृत रूप देता है।

विरोधी रंग योजना

Dr.Kavita Kumari
P.G Dept. Of Home Science.
Mob:No.+91-9430429995
Email: drkavitakumarising@gmail.com

इसमें वो दो रंग जो एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हों विरोधी रंग योजना के अंतर्गत आते हैं। अगर किसी ड्रेस में इस रंग योजना का प्रयोग किया जाए तो काफी बोल्ड लुक देता है। ये लोगों का ध्यान ज्यादा आकर्षित करता है। यदि कोई दुबला -पतला व्यक्ति है और उसकी लंबाई ज्यादा है तो विरोधी रंग योजना वाले ड्रेस में उसकी लंबाई थोड़ी कम लगती है।

<u>रंग योजना से संबन्धित चित्र</u>

इस प्रकार ड्रेसों में रंगों का समन्वय कितना महत्वपूर्ण है और व्यक्ति के पर्सनलिटी को किस प्रकार प्रभावित करता है यह उपरयुक्त कथनों से समझा जा सकता है। ड्रेस डिजाइनिंग मे रंग महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। रंग वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

References:

Dr.Kavita Kumari
P.G Dept. Of Home Science.
Mob:No.+91-9430429995
Email: drkavitakumarising@gmail.com

www.stitchmyfit.com/colour -harmony in clothes

A textbook of Home Management and hygiene &Physiology : Sushma Gupta, Neeru Garg and Amita Agrawal. kalyani publication.